Nai Dunia (Indore), 6th November 2026, *Naidunia City*, Page-IV

बढ़ाएंगे वैज्ञानिक अनुसंधान व नवाचार

मंथन ● चार सत्रों में विज्ञानियों ने बताईं आधुनिक तकनीकें, प्रौद्योगिकी पर चर्चा

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) ने वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने पर जोर दिया। गुरुवार को संस्थान में प्रौद्योगिकी प्रसार एवं जागरूकता पर कार्यक्रम रखा गया। इसमें विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों को आधुनिक तकनीकों से परिचित कराना था।

मुख्य अतिथि आइआइटी इंदौर के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर देवेंद्र देशमुख और विशेष अतिथि अनुसंधान एवं विकास के अधिष्ठाता प्रोफेसर अभिरूप दत्ता थे। इस दौरान भाभा परमाणु की तरफ से राजेश कुमार जैन मौजूद थे। कार्यक्रम में चार तकनीकी सत्र रहे। इनमें चिकित्सा प्रौद्योगिकी, प्लाज्मा प्रौद्योगिकी, न्यूट्रान आधारित तकनीक और रोबोटिक्स आधारित तकनीक पर विस्तार से चर्चा की गई। वैज्ञानिकों ने बताया कि इन क्षेत्रों में हो रहे अनुसंधान का उपयोग स्वास्थ्य सेवाओं, ऊर्जा, औद्योगिक विकास और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में किस तरह किया जा सकता है। चिकित्सा प्रौद्योगिकी के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं और उपचार के नए विकल्प विकसित करने की संभावनाओं पर जानकारी दी गई। प्लाज्मा व न्यूट्रान आधारित तकनीकों के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक उपयोगों से भी प्रतिभागियों को परिचित कराया गया। रोबोटिक्स क्षेत्र में विकसित हो रही तकनीकों और उनके व्यावहारिक इस्तेमाल पर भी चर्चा हुई।



प्रौद्योगिकी प्रसार एवं जागरूकता कार्यक्रम में मौजूद अतिथियों ने रखे विचार ● सौजन्य संस्थान

युवाओं को उद्यमिता अपनाने का संदेश: अंत में 'उद्यमिता क्यों?' विषय पर प्रस्तुति हुई। इसमें युवाओं को सिर्फ नौकरी तक सीमित न रहकर अपने नए विचारों और शोध को व्यावहारिक उत्पादों एवं तकनीकी समाधानों में बदलने के लिए प्रेरित किया गया। उन्हें बताया गया कि वैज्ञानिक सोच और नवाचार के माध्यम से रोजगार तलाशने के बजाय रोजगार देने वाले अवसर भी तैयार किए जा सकते हैं।

शोध व तकनीक के बीच मजबूत होगा तालमेल

दोनों संस्थानों के बीच संयुक्त अनुसंधान, तकनीकी विकास, वैज्ञानिक विशेषज्ञता के आदान-प्रदान और विद्यार्थियों के प्रशिक्षण सहित विषयों पर भी जोर दिया गया। इसका उद्देश्य प्रयोगशालाओं में होने वाले शोध को समाज और उद्योगों के उपयोग तक पहुंचाना है।